मानव कल्याण के लिए धर्म सम्मेलन का दूसरा दिन,

मानव कल्याण के लिए धर्म पर अतंर्राष्ट्रीय परिसंवाद के दूसरे दिन तीन मुख्य सत्र और दो समानांतर सत्रों में देश-विदेश के करीब 80 विद्वानों ने अपने विचार रखे। शाम को हुए आमसत्र में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने सिंहस्थ के विचार कुंभ पक्ष को अहमियत देते हुए कहा कि जीडीपी के साथ आम लोगों तक भी विकास के लाभ पहुंचना चाहिए। सम्मेलन में जूना अखाड़ा के प्रमुख महामंडलेश्वर **स्वामी अवधेशानंद गिरी ने कहा कि** अमृतकुंभ स्वयं से संवाद का अवसर देता है और धर्म है तो अभयता आती है। उन्होने कहा कि मालव देश गहन गंभीर है और कृष्ण को गीता भी यहीं मालवा से मिली। उन्होने कहा कि देश की राजधानी दिल्ली बनी लेकिन बहुत से लोग देश की आध्यात्मिक नगरी उज्जैयनी को राजधानी बनाना चाहते थे।स्वामी अवधेशानंद गिरि ने कहा कि पश्चिम की दृष्टि में पूरा विश्व बाजार है जबकि भारतीय दृष्टि में पूरा विश्व परिवार है। उनहोने कहा कि आज भारत की सबसे बड़ी समस्या पश्चिमी भोगवाद है ना कि नक्सलवाद या आतंकवाद। स्वामीजी ने कहा कि संवाद ही शांति और रास्ता खोलने का मार्ग है और अपने जैसा दूसरों को माने तभी बात बनेगी। धर्म और आध्यात्म को परिभाषित करते हुए उन्होने कहा कि जो आपके स्वभाव की तरफ ले जाये वो आध्यात्म और जो आपको आपके स्वभाव में लौटाये वही धर्म है।

इस अवसर पर केंद्रीय तिब्बती विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपतिप्रो. गेशे सेमटेन ने कहा कि परिवार में शांति के लिए परिवार के हर सदस्य के मन में शांति होगी तो समाज और देश में भी शांति होगी। उन्होने कहा कि धर्म के नाम पर विचार थोपने से युद्ध होते है। शिक्षा प्रणाली में मौलिक परिवर्तन कर धर्म अधर्म की विवेचना सिखाने से प्रेम, सद्भाव और मानव कल्याण की भावना विकसित होगी। उन्होने कहा कि संकीर्णता से तनाव पैदा होता है और सभी धर्म मिलकर एक दूसरे के पूरक बने तो समाज में सहिष्णुता बढ़ेगी। वहीं **अमेरिकी वैदिक अध्ययन संस्थान के निदेशक वेदाचार्य डेविड फ्राउले ने कहा कि**

कोई भी धर्म लेकर पैदा नहीं होता सब मनुष्य पैदा होते हैं और शरीर, दिमाग और चैतन्यता सभी में होती है, शरीर और दिमाग के स्तर पर सभी अलग-2 लेकिन चैतन्य स्तर पर हम सभी एक है। उन्होने कहा कि भारत मानवता की सबसे बड़ी पहचान और भारतीय संस्कृति को पूरे विश्व में फैलाने की ज़रुरत है। भारत पूरे विश्व को राह दिखा सकता है और शांति का वाहक बनकर एक नए विश्व की स्थापना का सूत्रधार बन सकता है।

न्यू एज इस्लाम के संस्थापक संपादक सुल्तान शाहीन ने कहा कि सभी धर्मों में सहभाव वक्त की जरुरत। उन्होने कहा कि इस्लाम के नाम में ही शांति और सभी धर्मों का सम्मान इसके मूल में है। इस्लाम पूरी मानवता के लिए बनाया गया धर्म है। कई सूफी संतो ने राम और कृष्ण को पैंगबर माना है। वहीं श्रीलंका के शहरी विकास मंत्री **श्री पताली चंपिका रनावका ने कहा कि** पूरे विश्व को करुणा, प्रेम, समर्पण और सम्मान से जोड़ा जा सकता है। उनहोने कहा कि भारत और श्रीलंका के बीच बौद्ध धर्म का पुल है और हम दोनो देशों के बीच रिश्तों का नया पुल बनाने की कोशिश कर रहे हैं।

दिन के पहले मुख्य सत्र की अध्यक्षता डोबकॉक यूनिवर्सिटी दक्षिण कोरिया के प्रो. सुन क्यून किम ने की। सत्र में मार्थोमा सभा केरल के प्रमुख श्री जोसफ मार्थोमा मेट्रोपोलिटन , विष्णुमोहन फाउंडेशन के श्री हरिप्रसाद स्वामी, होलिस्टिक साइंस रिसर्च सेंटर के डॉ शैलेष मेहता एवं टेम्पल ऑफ अंडरस्टैंडिंग ऑफ इंडिया के डॉ एके मर्चेंट मौजूद थे।

जोसफ मार्थोमा ने कहा कि मानवता का कल्याण मनुष्य का स्वप्न होता है। बिना कर्म के कोई भी उपदेश व्यर्थ है। मार्थोमा ने महात्मा गांधी के अहिंसा के सिद्धांत को मौजूदा दौर में भी अत्यंत प्रांसगिक बताया। श्री हरिप्रसाद स्वामी ने धर्म के परिप्रेक्ष्य में वैराग्य की महत्ता बताई। उन्होने कहा कि व्यक्ति में बदलाव से ही समाज में बदलाव आएगा और किसी को भी अपने धर्म पर अहंकार नहीं होना चाहिए। डॉ शैलेष मेहता ने उपयुक्त समझ और ज्ञान को धर्म का मर्म जानने के लिए ज़रुरी बताया। उन्होने नकारात्मक और सकारात्मक व्यवहार के शरीर पर पड़ने वाले प्रभाव की विस्तृत चर्चा की। डॉ मर्चेंट ने ज्ञान एवं धर्म के पारस्परिक संबंधों को उजाकर किया। उन्होने बेहतर जीवन के लिए आध्यात्मिक मूल्यों को जीवन में अंगीकार करना जरुरी बताया।

धर्म धम्म सम्मेलन के दूसरे मुख्य सत्र की अध्यक्षता राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान दिल्ली के पूर्व कुलपति प्रो कुटुंब शास्त्री ने की। अमेरिका से होलिस्टिक साइंस चेरिटिबल रिसर्च फाउंडेशन के डॉ राधाकृष्णन ने कहा कि प्रकृति अपने आप में पूर्ण है लेकिन दृष्टि दोष होने से हम उस पूर्णता का अहसास नहीं कर पाते। प्रसन्ना ट्रस्ट बैंगलोर के स्वामी सुखबोधानंद ने बड़े ही रोचक अंदाज में कहा कि हमारे जीवन की तरह हमारा धर्म भी यत्रंवत हो गया है और हमारा ध्यान क्रिया की बजाय प्रतिक्रिया पर केंद्रित हो गया है। उन्होने कहा कि हमें देखने की दृष्टि विकसित करना होगी। उन्होने गीता के परिप्रेक्ष्य में जीवन को परिस्थिति, मनस्थिति और आत्मस्थिति का समन्वय बताते हुए जीवन में सरलता को ही धर्म का उद्देश्य कहा। जापान के प्रो शॉन हीनो ने मानव कल्याण के लिए सभी धर्मों के आदर्श मूल्यों को स्वीकार कर उनपर अमल करने पर बल दिया। प्रो शास्त्री ने कहा कि धर्म सदा से है। धर्म ना तो पैदा हुआ है और ना ही मरता है। प्रो शास्त्री के मुताबिक धर्म कल्याण के सिवा कुछ और हो ही नहीं सकता।

इंदौर के ब्रिलियंट कन्वेंशन सेंटर में चल रहे इस सम्मेलन में 6 अलग-अलग विषयों पर दो समानांतर सत्रों में विश्व शांति, पर्यावरण और प्रकृति, धार्मिक बहुवचनतावाद, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्य, लैंगिक समानता और सामाजिक न्याय एवं समाज सेवा पर 66 शोध पत्र पेश किए गए।